चिकित्सीय
आपातकाल/एम्बुलेंस सेवा के लिए
कृपया 112 पर डायल करें।

अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

बिजली चली गयी
1800–345–1111

रजि.न.34300/80 | संख्या 206 | श्री विजय पुरम, रविवार, 02 अगस्त 2026 | web: dt.andamannicobar.gov.in | 2.00 रूपए

माननीय प्रधानमंत्री आज "विकसित भारत संकल्प अभियान के लिए नशा मुक्त युवा" कार्यक्रम शुभारम्भ करेंगे

दक्षिण अण्डमान ज़िले से करीब 1000 स्वयंसेवकों के इस अभियान से जुड़ने की संभावना

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन (दक्षिण अण्डमान ज़िला) द्वारा भारत सरकार के युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय के अंतर्गत माई भारत, श्री विजय पुरम के सहयोग से 2 अगस्त, 2026 को सुबह 10 बजे डॉ. बी.आर. अंबेडकर प्रौद्योगिकी संस्थान (डीब्राइट), श्री विजय पुरम के सभागार में "विकसित भारत संकल्प अभियान के लिए नशा मुक्त युवा" कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य नशा मुक्त भारत के राष्ट्रीय जनआंदोलन को सशक्त बनाना तथा युवाओं को विकसित भारत@2047 के संकल्प को साकार करने में योगदान देने के लिए प्रेरित करना है।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का वर्चुअल संबोधन होगा, जिसमें वे देशभर के युवाओं से संवाद करेंगे। इस राष्ट्रव्यापी अभियान के माध्यम से देशभर के लगभग 10,000 स्थानों को जोड़े जाने तथा प्रत्यक्ष एवं वर्चुअल माध्यम से एक करोड़ से अधिक युवाओं की सहभागिता सुनिश्चित किए जाने की अपेक्षा है। दक्षिण अण्डमान ज़िले में इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियान में माई भारत के लगभग 1,000 स्वयंसेवकों एवं युवाओं के भाग लेने की संभावना है।

श्री विजय पुरम में आयोजित इस कार्यक्रम में माई भारत स्वयंसेवकों, राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवकों तथा जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय (जेएनआरएम), टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय (टीजीसीई), अण्डमान कॉलेज (एनकॉल), अण्डमान विधि महाविद्यालय (एएलसी), डॉ. बी.आर. अंबेडकर प्रौद्योगिकी संस्थान (डीब्राइट), अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह चिकित्सा संस्थान (अनिम्स) तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) सहित प्रमुख उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्र भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त युवा क्लबों, गैर–सरकारी संगठनों, आध्यात्मिक संगठनों तथा विभिन्न सरकारी विभागों के प्रतिनिधि भी कार्यक्रम में शामिल होंगे। सभी प्रतिभागी सामूहिक रूप से नशा मुक्त युवा शपथ ग्रहण करेंगे तथा नशामुक्त जीवनशैली अपनाने एवं अन्य लोगों को भी इस अभियान से जोड़ने का संकल्प दोहराएंगे।

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन (दक्षिण अण्डमान ज़िला) तथा माई भारत, श्री विजय पुरम ने सभी शैक्षणिक संस्थानों, युवा संगठनों, नागरिक समाज संगठनों, अभिभावकों एवं नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं, से इस महत्वपूर्ण अभियान में सक्रिय भागीदारी करने तथा माई भारत पोर्टल के माध्यम से ई–शपथ लेने की अपील की है। साथ ही, जनसंचार माध्यमों से भी अनुरोध किया गया है कि वे इस अभियान का व्यापक प्रचार–प्रसार करें, ताकि नशा मुक्त भारत के इस राष्ट्रीय जनआंदोलन में अधिकतम जनभागीदारी सुनिश्चित की जा सके।

माननीय सांसद द्वारा द्वीपसमूह के सभी स्वास्थ्य संस्थानों की व्यापक समीक्षा का आग्रह

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह से माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय ने माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा को एक पत्र लिखकर उत्तर अण्डमान के डिगलीपुर उप–ज़िला चिकित्सालय में चिकित्सा सुविधाओं को सुदृढ़ किए जाने और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के सभी ज़िला चिकित्सालयों, उप–ज़िला चिकित्सालयों, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों तथा स्वास्थ्य एवं आरोग्य केन्द्रों की व्यापक समीक्षा किए जाने का अनुरोध किया है।

सांसद कार्यालय से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार अपने पत्र में माननीय सांसद ने मंत्रालय से सभी रिक्त चिकित्सा एवं सहायक चिकित्सा पदों को भरने तथा स्वास्थ्य अवसंरचना में सुधार करने का भी आग्रह किया है, ताकि द्वीपसमूह के प्रत्येक भाग में रहने वाले लोगों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं सुलभ हो सकें। माननीय सांसद ने इस संबंध में हस्तक्षेप का अनुरोध करते हुए अपने अभ्यावेदन की प्रतियां माननीय केंद्रीय गृह मंत्री, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल और अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के मुख्य सचिव को भी अग्रेषित की हैं।

'रेनफॉरेस्ट बर्डिंग ट्रेल' का सफल आयोजन

प्रतिभागियों ने द्वीपसमूह की समृद्ध पक्षी विविधता का लिया अनुभव

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त।

पर्यटन मेले, उत्सव एवं कार्यक्रम 2026–27 के अंतर्गत, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय ने पर्यावरण एवं वन विभाग के सहयोग से आज चिड़ियाटापू स्थित जैविक उद्यान में 'रेनफॉरेस्ट बर्डिंग ट्रेल' (वर्षावन पक्षी अवलोकन भ्रमण) का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यक्रम में पक्षी प्रेमियों, प्रकृति प्रेमियों, विद्यार्थियों, छायाकारों, यात्रा व्यवसाय से जुड़े पेशेवरों तथा आमजन ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सुबहकाल आयोजित इस भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने द्वीपसमूह की समृद्ध पक्षी विविधता एवं स्वच्छ वर्षावन पारिस्थितिकी तंत्र का अनुभव किया। अनुभवी पक्षी विशेषज्ञों एवं विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में आयोजित इस भ्रमण ने प्रतिभागियों को पक्षियों की अनेक प्रजातियों को उनके प्राकृतिक आवास में देखने और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की विशिष्ट जैव विविधता के बारे में जानने का अवसर प्रदान किया। चिड़ियाटापू जैविक उद्यान की उप निदेशक श्रीमती मीरा नांबियार ने प्रतिभागियों को जैविक उद्यान के बारे में जानकारी दी। जानकारी के उपरांत प्रतिभागियों को दो समूहों में विभाजित किया गया तथा वन रक्षक श्री राम विकास, वन क्षेत्राधिकारी श्री प्रमोद सिंह एवं पक्षी क्लब के सदस्य श्री रूबेन पॉल के साथ उद्यान के भीतर प्रकृति भ्रमण पर ले जाया गया, जहां पक्षी अवलोकन सत्र आयोजित किया गया। उन्होंने स्थानिक एवं प्रवासी पक्षियों, उनके पारिस्थितिक महत्व,

शेष पृष्ठ 4 पर

मत्स्य संग्रहालय–सह–मत्स्यालय में विक्रय केन्द्र स्थापित करने हेतु स्वयं सहायता समूहों से आवेदन मांगे गए

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के मत्स्य विभाग ने अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के वास्तविक स्वयं सहायता समूहों से विभागीय मत्स्य संग्रहालय–सह–मत्स्यालय परिसर में विक्रय केन्द्र स्थापित करने के लिए स्थान आवंटन हेतु आवेदन आमंत्रित किए हैं।

इस विक्रय केन्द्र का उद्देश्य मत्स्य क्षेत्र से संबंधित उत्पादों तथा विभाग द्वारा अनुमोदित अन्य वस्तुओं के विपणन एवं बिक्री को प्रोत्साहित करना है, जिससे पात्र स्वयं सहायता समूहों को आजीविका के अवसर उपलब्ध कराए जा सकें तथा साथ ही मत्स्य संग्रहालय–सह–मत्स्यालय में आने वाले आगंतुकों के लिए सुविधाओं में भी वृद्धि हो सके।

पात्रता: आवेदक एक वास्तविक स्वयं सहायता समूह होना चाहिए, जो सक्षम प्राधिकारी द्वारा विधिवत पंजीकृत अथवा मान्यता प्राप्त हो। आवेदन के साथ स्वयं सहायता समूह को अपने पंजीकरण अथवा मान्यता का दस्तावेज़ी प्रमाण प्रस्तुत करना होगा। स्वयं सहायता समूह किसी भी सरकारी विभाग अथवा एजेंसी द्वारा काली सूची में शामिल नहीं होना चाहिए। स्वयं सहायता समूह को सभी लागू वैधानिक प्रावधानों तथा मत्स्य निदेशालय द्वारा निर्धारित अन्य शर्तों का पालन करना होगा।

मत्स्य विभाग द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इच्छुक स्वयं सहायता समूह अपने आवेदन संबंधित स्वयं सहायता समूह के लेटरहेड पर आवश्यक सहायक दस्तावेज़ों सहित, संबंधित खंड विकास अधिकारी की विधिवत संस्तुति एवं अग्रेषण के साथ सहायक निदेशक (मत्स्य संग्रहालय–सह–मत्स्यालय), मत्स्य निदेशालय, श्री विजय पुरम के कार्यालय में 16 अगस्त, 2026 तक अथवा उससे पूर्व प्रस्तुत कर सकते हैं।

आपकी सरकारी सेवा में देरी हुई?

अब आपके पास अधिकार हैं!

सरकारी अधिकारियों को सार्वजनिक सेवाओं में देरी करने पर 10,000 रुपये तक का जुर्माना देना होगा

श्री विजय पुरम, 31 जुलाई

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन ने अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह (सार्वजनिक सेवाओं का अधिकार) विनियमन, 2026 का मसौदा तैयार किया है, जो एक प्रमुख नागरिक–हितैषी सुधार है और इसके तहत अधिसूचित सार्वजनिक सेवाओं के वितरण में देरी के लिए सरकारी अधिकारियों को व्यक्तिगत रूप से जवाबदेह बनाया गया है।

इसका आपके लिए क्या मतलब है?

- निर्धारित समय के भीतर सरकारी सेवाओं की सूचना प्राप्त करें।
- यदि आपकी सेवा में देरी होती है, तो आपको पहली अपील दाखिल करने की आवश्यकता नहीं है। मामला स्वतः ही शिकायत निवारण अधिकारी को भेज दिया जाएगा। शिकायत निवारण अधिकारी को 3 दिनों के भीतर आपकी शिकायत की प्राप्ति स्वीकार करनी होगी और यह सुनिश्चित करना होगा कि उस पर कार्रवाई की जाए।
- यदि आप फिर भी संतुष्ट नहीं हैं, तो आप नामित प्राधिकारी और फिर केंद्र शासित प्रदेश के अपीलीय प्राधिकारी के समक्ष अपील कर सकते हैं, जिसका निर्णय अंतिम होगा।

देरी का खामियाजा भुगतना पड़ता है

अनावश्यक देरी के लिए ज़िम्मेदार सरकारी अधिकारियों पर प्रति सेवा 1,000 रुपये से लेकर 10,000 रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

जुर्माना सीधे वसूल किया जाएगा
संबंधित अधिकारी का वेतन

नागरिकों के लिए मुआवज़ा

योग्य मामलों में, नागरिकों को दोषी अधिकारी से वसूल किए गए जुर्माने के एक हिस्से से मुआवज़ा भी मिल सकता है।

बेहतर शासन की दिशा में एक कदम

नए नियम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है:

- सरकारी सेवाओं की समयबद्ध डिलीवरी
- त्वरित शिकायत निवारण
- अधिकारियों की अधिक जवाबदेही
- पारदर्शी प्रशासन और नागरिक–हितैषी
- बेहतर और अधिक कुशल सार्वजनिक सेवा वितरण

आपका समय कीमती है... आपके अधिकार कीमती हैं...

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह (सार्वजनिक सेवाओं का अधिकार) विनियमन, 2026 प्रत्येक नागरिक को समय पर, पारदर्शी और जवाबदेह सरकारी सेवाओं की अपेक्षा करने का अधिकार देता है।

प्रशासनिक सुधार एवं प्रशिक्षण/पीजीसी की प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि मसौदा विनियम https://andamannicobar.gov.in/ पर उपलब्ध करा दिया गया है और इस पर 24 अगस्त, 2026 या उससे पहले दावे और आपत्तियां आमंत्रित की गई हैं।

मायाबंदर कॉलेज द्वारा "विकसित भारत के लिए नशा मुक्त युवा" वॉकाथॉन आयोजित

मायाबंदर, 1 अगस्त

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2 अगस्त, 2026 को देशभर के लगभग 10,000 स्थानों पर करीब एक करोड़ युवाओं को वर्चुअल संबोधन के माध्यम से प्रारंभ किए जाने वाले "विकसित भारत के लिए नशा मुक्त युवा अभियान" के पूर्व–लॉन्च कार्यक्रमों के अंतर्गत, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय (एमजीजीसी),

मायाबंदर, उत्तर व मध्य अण्डमान की एनएसएस–माय भारत इकाइयों द्वारा 1 अगस्त, 2026 को मायाबंदर में वॉकाथॉन का आयोजन किया गया।

प्रोथरापुर विकास खंड में आजीविका संवर्धन के तहत पशुधन सेवा केन्द्र एवं दो कुक्कुट आश्रयों का उद्घाटन

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के ग्रामीण विकास, पंचायती राज संस्था एवं शहरी स्थानीय निकाय निदेशालय के अंतर्गत सामुदायिक विकास खंड प्रोथरापुर द्वारा संचालित आजीविका संवर्धन पहलों के तहत ग्रामीण विकास एवं पंचायत निदेशक डॉ. अपूर्वा शर्मा ने दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की एकीकृत कृषि समूह पहल के अंतर्गत एक पशुधन सेवा केन्द्र तथा वीबी जी–राम–जी योजना के अंतर्गत बिड़नाबाद ग्राम पंचायत में निर्मित दो कुक्कुट आश्रयों का उद्घाटन किया। ग्रामीण विकास एवं पंचायत निदेशक ने इस पहल की सराहना करते हुए स्वयं सहायता समूह के सदस्यों से पशुधन सेवा केन्द्र एवं कुक्कुट आश्रयों का अधिकतम उपयोग कर कुक्कुट पालन आधारित उद्यमों का विस्तार करने तथा अपनी आजीविका में सुधार लाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में प्रोथरापुर की खंड विकास अधिकारी श्रीमती गुरजीत कौर, बिड़नाबाद ग्राम पंचायत के प्रधान श्री आर. परमशिवम, राज्य नोडल अधिकारी, विकास खंड एवं पंचायत के कर्मचारी, स्वयं सहायता समूह के सदस्य तथा ग्रामीण उपस्थित थे।

शेष पृष्ठ 4 पर

मौसम संबंधी पूर्वानुमान

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त

2 से 6 अगस्त को निकोबार द्वीपसमूह में एक या दो स्थानों पर भारी वर्षा (07 से 11 सेंटीमीटर) होने की अत्यधिक संभावना है। 2, 3, 4, 5 एवं 6 अगस्त को अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में एक या दो स्थानों पर 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से झोंकेदार हवाओं के साथ आंधी–तूफान तथा बिजली गिरने की अत्यधिक संभावना है। 7 अगस्त को भी अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में एक या दो स्थानों पर 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से झोंकेदार हवाओं के साथ आंधी–तूफान तथा बिजली गिरने की अत्यधिक संभावना है। आपदा प्रबंधन निदेशालय द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 3 अगस्त, 2026 से 5 अगस्त, 2026 तक अण्डमान तथा निकोबार तटों के साथ तथा समीपवर्ती समुद्री क्षेत्रों में 35 से 45 किलोमीटर प्रति घंटे की गति वाली तेज हवाएं चलने तथा समय–समय पर इनकी गति 55 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंचने की संभावना है। मछुआरों को 3 अगस्त, 2026 से 5 अगस्त, 2026 तक अण्डमान तथा निकोबार तटों के साथ तथा समीपवर्ती समुद्री क्षेत्रों में समुद्र में नहीं जाने की सलाह दी गई है। अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के तटीय क्षेत्रों के लिए ऊंची समुद्री लहरों की चेतावनी: 17.0 से 20.0 सेकंड की अवधि तथा 1.6 से 1.7 मीटर ऊंचाई वाली समुद्री लहरें 2 अगस्त, 2026 को रात्रि 11.30 बजे तक आने का पूर्वानुमान है। इसके मद्देनजर समुद्री लहरों के उफान की संभावना व्यक्त की गई है। नौकाओं का अत्यधिक सतर्कता के साथ संचालन करने तथा मनोरंजन संबंधी गतिविधियां पूरी सावधानी के साथ करने की सलाह दी गई है।

एनकॉल द्वारा संसाधन व्यक्तियों एवं अतिथि प्राध्यापकों की अंतिम सूची जारी

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त

अण्डमान कॉलेज (एनकॉल) द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि महाविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र 2026–27 के लिए संसाधन व्यक्तियों एवं अतिथि प्राध्यापकों की अंतिम सूची अपनी वेबसाइट पर अपलोड कर दी है। अतिथि प्राध्यापकों की अंतिम सूची महाविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध है। अभ्यर्थी इसे महाविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट **https://ancol.andamannicobar.gov.in/** से डाउनलोड कर सकते हैं।

मायाबंदर कॉलेज द्वारा "विकसित भारत

——————————पृष्ठ 1 का शेष

इस वॉकाथॉन को मुख्य अतिथि श्री एस. कृष्णा चैतन्य, दानिक्स, अपर ज़िलाधीश (एडीएम), उत्तर व मध्य अण्डमान, उप मंडलीय मजिस्ट्रेट (मुख्यालय), मायाबंदर तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी, ज़िला परिषद, उत्तर व मध्य अण्डमान द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

वॉकाथॉन की शुरुआत दानापुर जंक्शन से हुई और यह मायाबंदर बाज़ार पर जाकर समाप्त हुई। इस जागरूकता रैली में लगभग 200 छात्रों के साथ–साथ महाविद्यालय के संकाय एवं कर्मचारी उत्साहपूर्वक शामिल हुए।

इससे पूर्व, एमजीजीसी के एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. कंडिमुथु ने उपस्थित जनसमूह का स्वागत किया तथा "विकसित भारत के लिए नशा मुक्त युवा अभियान" के अंतर्गत वर्ष भर संचालित किए जाने वाले कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने युवाओं को विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान देने हेतु जागरूक करने पर ज़ोर दिया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. वी. आर. मूर्ति ने अध्यक्षीय संबोधन दिया। मुख्य अतिथि श्री एस. कृष्णा चैतन्य ने अपने संबोधन में मादक पदार्थों से दूर रहने के महत्व को रेखांकित करते हुए नशे के दुष्प्रभावों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने प्रतिभागियों को "विकसित भारत के लिए नशा मुक्त युवा" शपथ दिलाई और वॉकाथॉन को रवाना किया। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. जी. गॉडसन बेदेयाह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

समापन स्थल मायाबंदर बाज़ार में डॉ. प्रियंका इक़बाल (आरपी अस्पताल), सुश्री सुविदा (आईआरसी) तथा डॉ. सत्य प्रकाश, विभागाध्यक्ष (भूगोल), एमजीजीसी ने विद्यार्थियों को संबोधित किया और उन्हें स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा नशामुक्त समाज के निर्माण हेतु सामूहिक प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। वॉकाथॉन के दौरान छात्रों ने उत्साहपूर्वक "सशक्त युवा, सशक्त राष्ट्र", "ड्रग्स को ना कहें, उज्ज्वल भविष्य को हां कहें" जैसे नारे लगाए, जिससे आम जनता में नशे के दुष्प्रभावों एवं स्वस्थ, नशामुक्त जीवनशैली के प्रति जागरूकता फैली।

प्रोथरापुर विकास खंड में आजीविका

——————————पृष्ठ 1 का शेष

रंगाचांग वार्ड संख्या–4 में स्थापित पशुधन सेवा केन्द्र की स्थापना स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के बीच कुक्कुट पालन आधारित आजीविका गतिविधियों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से की गई है। एक बार में 240 अंडों को सेने की क्षमता वाली हैचरी इकाई गुणवत्तापूर्ण चूजों की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी तथा स्वयं सहायता समूहों एवं स्थानीय किसानों को पशुधन सहायता सेवाएं प्रदान करेगी। बिड़नाबाद, कालीकट एवं सीपीघाट ग्राम पंचायतों के पशुपालन से जुड़े स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को इस केन्द्र से लाभ मिलने की अपेक्षा है। यह केन्द्र कुक्कुट पालन को बढ़ावा देने, परिवारों की आय में वृद्धि करने तथा सतत आजीविका के अवसर सृजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

प्रोथरापुर की खंड विकास अधिकारी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि बिड़नाबाद ग्राम पंचायत के स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को सतत आधार पर कुक्कुट पालन अपनाने में सहयोग देने के उद्देश्य से वीबी जी–राम–जी योजना के अंतर्गत दो कुक्कुट आश्रयों का निर्माण किया गया है। प्रत्येक कुक्कुट आश्रय का निर्माण लगभग 1.50 लाख रुपये की लागत से किया गया है, जिससे प्रत्येक में लगभग 130 मानव–दिवस का रोज़गार सृजित हुआ है। प्रत्येक आश्रय में 50 पक्षियों को रखने की क्षमता है। ये आश्रय स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को वैज्ञानिक पद्धति से कुक्कुट पालन के लिए आवश्यक आधारभूत संरचना उपलब्ध कराएंगे, जिससे वे नियमित आय अर्जित कर सकेंगे, पोषण सुरक्षा में सुधार कर सकेंगे तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकेंगे। ग्रामीण विकास की दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन तथा वीबी जी–राम–जी योजनाओं के अभिसरण के अंतर्गत भविष्य में और अधिक पशुधन आश्रयों के निर्माण का भी प्रस्ताव है।

कृषि यंत्रीकरण एवं कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्टार्ट–अप्स एवं उद्यमियों हेतु आवेदन आमंत्रित

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसन्धान संस्थान कृषि यंत्रीकरण एवं कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचार आधारित प्रोटोटाइप अथवा न्यूनतम व्यवहार्य उत्पाद विकसित करने वाले उद्यमियों एवं स्टार्ट–अप्स से आवेदन आमंत्रित करता है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य नवाचार कर्ताओं को प्रौद्योगिकी मार्गदर्शन, इन्क्यूबेशन तथा हैंड–होल्डिंग सहायता प्रदान कर उनके नवीन व्यावसायिक विचारों को सफल एवं बाज़ार–उन्मुख उद्यमों में विकसित करने में सहयोग प्रदान करना है। चयनित अभ्यर्थियों को दो माह के इन्क्यूबेशन कार्यक्रम में सम्मिलित किया जाएगा, जिसके दौरान उन्हें विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी परामर्श, मार्गदर्शन एवं मेंटरशिप उपलब्ध कराई जाएगी, ताकि वे अपने नवाचारों को परिष्कृत कर उनके सफल व्यावसायीकरण की दिशा में आगे बढ़ सकें।

यह कार्यक्रम द्वीपीय कृषि प्रौद्योगिकियों, नारियल एवं मसाला आधारित मूल्य संवर्धन, एकीकृत जलीय कृषि, संरक्षित खेती, जैविक कृषि उत्पादों तथा जलवायु अनुकूल कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत स्टार्ट–अप्स एवं उद्यमियों के लिए है।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इच्छुक उद्यमी एवं स्टार्ट–अप्स लिंक **https://icarcircot.accubate.app/ext/form/23885/1/apply** के माध्यम से अपना आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 15 अगस्त, 2026, अधिक जानकारी के लिए श्री डी. करुणाकरन भा.कृ.अनु.प–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, श्री विजय पुरम, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, मोबाइल 9433286866, ई–मेल **d.karunakaran@icar.org.in** से संपर्क करें।

मालवाहक जहाज़ 'एमवी चुगलम' 9 अगस्त को कैम्पबेल बे के लिए होगा रवाना

श्री विजय पुरम, 1 अगस्त

मालवाहक जहाज़ एमवी चुगलम 9 अगस्त, 2026 को सायं 4 बजे जंगलीघाट जेटी से कार निकोबार, चावरा, तरेसा, कछाल एवं ननकौड़ी होते हुए कैम्पबेल बे के लिए रवाना होगा। संबंधित बंदरगाहों पर माल उतारने एवं लदान की प्रक्रिया पूर्ण करने के तुरंत बाद जहाज़ श्री विजय पुरम के लिए प्रस्थान करेगा। उक्त यात्रा के लिए माल की बुकिंग 3 अगस्त, 2026 से प्रतिदिन सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक वाणिज्यिक शाखा में प्रारंभ होगी। माल की लदान प्रक्रिया 5 अगस्त, 2026 से प्रारंभ की जाएगी।

जहाज़रानी सेवा निदेशालय द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में सभी प्रेषकों को यह भी सलाह दी गई है कि वे स्थानांतरण हेतु माल की वास्तविक मात्रा ही बुक कराएं, क्योंकि निर्धारित मात्रा से अधिक माल स्वीकार नहीं किया जाएगा।

'रेनफॉरेस्ट बर्डिंग ट्रेल' का सफल

——————————पृष्ठ 1 का शेष

आवास संरक्षण तथा द्वीपसमूह के संवेदनशील वर्षावन पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के महत्व पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने लगभग 20 प्रजातियों के पक्षियों का अवलोकन किया। इस पारिस्थितिकी पर्यटन पहल में विद्यार्थियों, पक्षी प्रेमियों तथा पर्यटन क्षेत्र से जुड़े हितधारकों सहित 54 प्रकृति प्रेमियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इनमें अण्डमान एसोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर, अण्डमान निकोबार टूर ऑपरेटर एसोसिएशन तथा पक्षी क्लब के सदस्य भी शामिल थे। प्रतिभागियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने द्वीपसमूह में प्रकृति आधारित पर्यटन एवं जैव विविधता संरक्षण के प्रति बढ़ती रुचि को दर्शाया।

कार्यक्रम में पक्षी अवलोकन को एक सतत पारिस्थितिकी पर्यटन गतिविधि के रूप में रेखांकित किया गया, जो न केवल उत्तरदायी प्रकृति आधारित पर्यटन को बढ़ावा देती है, बल्कि पर्यावरण जागरूकता एवं जैव विविधता संरक्षण को भी प्रोत्साहित करती है। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह के साथ विशेषज्ञों से संवाद किया, विभिन्न पक्षी प्रजातियों की पहचान की तथा द्वीपसमूह की अद्वितीय प्राकृतिक धरोहर की सराहना की।

वर्षावन पक्षी अवलोकन भ्रमण, उत्तरदायी एवं सतत पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देने तथा अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की अनुपम प्राकृतिक संपदा के प्रति व्यापक जन–जागरूकता उत्पन्न करने के प्रशासन के निरंतर प्रयासों का एक हिस्सा है। इस प्रकार की पहलें द्वीपसमूह के विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए विभिन्न सरकारी विभागों, पर्यटन क्षेत्र से जुड़े हितधारकों, शैक्षणिक संस्थानों तथा स्थानीय समुदाय के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करने हेतु एक महत्वपूर्ण मंच भी प्रदान करती हैं।

सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय ने पर्यावरण एवं वन विभाग, चिड़ियाटापू जैविक उद्यान के अधिकारियों, पर्यटन क्षेत्र से जुड़े हितधारकों, पक्षी क्लब तथा सभी प्रतिभागियों के प्रति इस कार्यक्रम को अत्यंत सफल बनाने में उनके पूर्ण सहयोग एवं उत्साहपूर्ण सहभागिता के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। निदेशालय ने द्वीपसमूह की असाधारण जैव विविधता को प्रदर्शित करने तथा पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भविष्य में भी इस प्रकार की और अधिक पारिस्थितिकी पर्यटन पहलों के आयोजन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन ने बच्चों की ट्रैफिकिंग के खिलाफ शुरू किया देशव्यापी अभियान

नई दिल्ली, 01 अगस्त (हि.स.)। जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन (जेआरसी) ने नई दिल्ली में आयोजित चार दिवसीय राष्ट्रीय परामर्श "इंश्योरिंग ए चाइल्ड राइट्स, पोटेंशियल एंड प्रास्पेरिटी" के दौरान 'नेशनल कैंपेन अगेंस्ट चाइल्ड ट्रैफिकिंग' की शुरुआत की। चाइल्ड ट्रैफिकिंग के खिलाफ यह अभियान देश के 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के सभी 782 जिलों में जेआरसी अपने 250 से अधिक सहयोगी संगठनों के जरिए चलाएगा। इस अभियान का लक्ष्य अगले एक वर्ष में 1.5 लाख गांवों को चाइल्ड ट्रैफिकिंग से मुक्त बनाकर, ट्रैफिकिंग के शिकार हुए एक लाख बच्चों को बचाना है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो 2024 के अनुसार देश में रोजाना 6 बच्चों की ट्रैफिकिंग होती है और 5 बच्चों को जबरन मजदूरी के लिए मजबूर किया जाता है। इसके अलावा हर घंटे 11 बच्चे गुम हो जाते हैं। इनमें से अधिकांश बच्चे ट्रैफिकिंग का ही शिकार होते हैं। ह्यूमन ट्रैफिकिंग हथियारों और ड्रग्स के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा संगठित अपराध है। महिलाएं और बच्चे खास तौर से इनके निशाने पर हैं, क्योंकि इनकी कमाई का एक बड़ा हिस्सा देह व्यापार और बच्चों से बंधुआ मजदूरी के रास्ते आता है। वहीं असंगठित क्षेत्र में बच्चों से बाल मजदूरी ट्रैफिकिंग के सबसे प्रचलित रूपों में से है।

जेआरसी के मुताबिक इस अभियान के तहत ग्राम सभाओं, स्कूलों और पंचायतों के जरिए व्यापक जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएंगे। जागरूकता कार्यक्रमों, पोस्टरों, बैनरों और विभिन्न गतिविधियों के जरिए परिवारों व समुदायों को बच्चों की ट्रैफिकिंग के बदलते रूपों और पीड़ितों बच्चों के कानूनी अधिकारों व उपायों की जानकारी दी जाएगी। अभियान में चाइल्ड ट्रैफिकिंग के संवेदनशील क्षेत्रों और सीमावर्ती जिलों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही, ट्रैफिकिंग से जुड़े नए तरीकों को पहचान कर उसकी सूचना देने के लिए समुदायों को भी जागरूक और सतर्क बनाया जाएगा। और वंचित और कमजोर बच्चों की पहचान कर उन्हें केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं और कौशल विकास कार्यक्रमों से जोड़ने के साथ ही उनका स्कूलों में दाखिला कराया जाएगा, ताकि वे ट्रैफिकिंग से बच सकें।

देशभर में पानी के ऊपर तैरेंगे सोलर प्लांट, केंद्र ने 5,000 मेगावाट फ्लोटिंग सोलर परियोजनाओं को दी मंजूरी

नई दिल्ली, 01 अगस्त। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट ने प्रधानमंत्री सूर्य सरोवर योजना को मंजूरी दे दी है. इस योजना के तहत देशभर के जलाशयों और औद्योगिक तालाबों पर 5,000 मेगावाट क्षमता के फ्लोटिंग सोलर प्लांट लगाए जाएंगे. इस महत्वाकांक्षी योजना पर 5,070 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे. देश में फिलहाल फ्लोटिंग सोलर क्षमता करीब 700 मेगावाट है. सरकार का लक्ष्य इसे बढ़ाकर लगभग 5,700 मेगावाट तक पहुंचाना है. योजना का लाभ सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को मिलेगा.

योजना के तहत वर्ष 2026–27 से 2030–31 के दौरान विभिन्न परियोजनाओं को मंजूरी दी जाएगी. हर फ्लोटिंग सोलर परियोजना के साथ कम से कम दो घंटे की क्षमता वाला एनर्जी स्टोरेज सिस्टम भी लगाया जाएगा. इससे जरूरत के समय बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित होगी और पावर ग्रिड पहले से अधिक मजबूत और भरोसेमंद बनेगा.

केंद्र सरकार सफलतापूर्वक पूरी होने वाली परियोजनाओं के लिए प्रति मेगावाट एक करोड़ रुपये तक की सहायता देगी. वहीं प्रारंभिक सर्वे और व्यवहार्यता अध्ययन के लिए प्रति परियोजना 50 लाख रुपये तक की वित्तीय मदद भी उपलब्ध कराई जाएगी.

फ्लोटिंग सोलर परियोजनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनके लिए अतिरिक्त जमीन की जरूरत नहीं होगी. जलाशयों और औद्योगिक तालाबों का उपयोग होने से भूमि पर दबाव कम होगा और उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव हो सकेगा.

सरकार का अनुमान है कि इस योजना से हर साल करीब एक करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन कम होगा. इसके साथ ही 16,000 से 17,000 लोगों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होने की संभावना है. सोलर पैनल, मॉड्यूल, फ्लोटिंग सिस्टम और बैटरी जैसे उपकरणों के घरेलू निर्माण को भी बढ़ावा मिलेगा.

विशेषज्ञों का मानना है कि प्रधानमंत्री सूर्य सरोवर योजना अक्षय ऊर्जा क्षमता बढ़ाने, जल संसाधनों के बेहतर उपयोग और विकसित भारत के लक्ष्य को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी.

छह वर्ष बाद लिपूलेख दर्रे से भारत–चीन सीमा व्यापार शुरू

पिथौरागढ़/धारचूला, 01 अगस्त (हि.स.)। कोविड–19 महामारी के कारण करीब छह वर्षों से बंद भारत–चीन सीमा व्यापार शनिवार को उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले स्थित ऐतिहासिक लिपूलेख दर्रे के रास्ते फिर शुरू हो गया। वर्ष 2026 के सीमा व्यापार के शुभारंभ के साथ भारतीय व्यापारियों का पहला दल तिब्बत के तकलाकोट पहुंच गया, जहां आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद व्यापारिक गतिविधियां शुरू कर दी गई हैं।भारत–तिब्बत व्यापार संघ के अध्यक्ष जीवन सिंह रौकली के नेतृत्व में 16 पंजीकृत व्यापारी और चार हेल्पर सहित कुल 20 सदस्य सभी निर्धारित प्रक्रियाएं पूरी कर लिपूलेख दर्रे के रास्ते चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में प्रवेश कर तकलाकोट मंडी पहुंचे।

उपजिलाधिकारी धारचूला आशीष जोशी के अनुसार, 31 जुलाई की शाम व्यापारिक दल ने गुंजी स्थित इमीग्रेशन कार्यालय में सभी औपचारिकताएं पूरी कीं और नाबीढांग में रात्रि विश्राम किया।

शनिवार सुबह लगभग 10:15 बजे चीन के अधिकारियों द्वारा आवश्यक जांच और अनुमति मिलने के बाद दल ने सीमा पार की और तकलाकोट पहुंचकर व्यापारिक गतिविधियों का शुभारंभ किया। उन्होंने बताया कि चीन प्रशासन के निर्देशानुसार फिलहाल केवल उन्हीं व्यापारियों को प्रवेश दिया गया है, जो पूर्व से पंजीकृत हैं और पहले भी सीमा व्यापार कर चुके हैं।

विझिंजम अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह को निर्यात–आयात के लिए मिली मंजूरी, 18 अगस्त से शुरू होगा परिचालन

नई दिल्ली/तिरुवनंतपुरम, 01 अगस्त (हि.स.)। केरल स्थित विझिंजम अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह को विदेशों के साथ सामान का आयात और निर्यात शुरू करने के लिए सीमा शुल्क विभाग की मंजूरी मिल गई है। विझिंजम इंटरनेशनल सी–पोर्ट लिमिटेड (वीआईएसएल) ने हाल ही में एक बयान में कहा कि केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने इसको शुरू करने की मंजूरी दे दी है। बंदरगाह को 18 अगस्त से निर्यात और आयात कार्गो परिचालन शुरू करने की अंतिम मंजूरी दी गई है।

सीबीआईसी के 24 जुलाई को जारी आदेश के मुताबिक तिरुवनंतपुरम के पास स्थित विझिंजम अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह अब तक केवल अंतरराष्ट्रीय पारवहन केंद्र के रूप में कार्य कर रहा था, लेकिन 18 अगस्त 2026 से यहां माल के निर्यात और आयात का परिचालन भी शुरू हो जाएगा।

वीआईएसएल के मुताबिक वर्तमान में बंदरगाह से संबद्ध कोई निर्धारित कंटेनर फ्रेट स्टेशन (सीएफएस) नहीं होने के कारण सीबीआईसी ने निर्यात और आयात कार्गो के प्रबंधन के लिए कई शर्तें निर्धारित की हैं। कंटेनर फ्रेट स्टेशन बंदरगाह के पास स्थित एक ऐसा केंद्र होता है, जहां आयात और निर्यात होने वाले कंटेनरों में रखे सामान की जांच, पैकिंग, खोलने, दोबारा भरने और सीमा शुल्क से

जुड़ी औपचारिकताएं पूरी की जाती हैं। इसके तहत आयात परिचालन केवल प्रत्यक्ष बंदरगाह आपूर्ति के लिए पात्र पूर्ण कंटेनर भार वाले कंटेनरों तक सीमित रहेगा। ऐसे कंटेनरों को बंदरगाह पर पहुंचने के 48 घंटे के भीतर सीधे आयातक के परिसर तक पहुंचाना होगा।

विझिंजम इंटरनेशनल पोर्ट भारत का पहला गहरे पानी का ट्रांसशिपमेंट बंदरगाह है, जो केरल के तिरुवनंतपुरम में स्थित है। इसे 2 मई 2025 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा राष्ट्र को समर्पित किया गया था। यह अंतरराष्ट्रीय पूर्व–पश्चिम शिपिंग रूट से केवल 10 समुद्री मील की दूरी पर है।

फोन की गुलामी से चाहिए आजादी? नोटीफिकेशन ऑफ करने से टाइमर लगाने तक, ऐसे फॉलो करें डिजिटल बाउंड्री रूल

नई दिल्ली, 01 अगस्त। ऐसा मुश्किल ही कोई दिन होगा जब हमने अपना फोन इस्तेमाल न किया हो। स्मार्टफोन जिंदगी का इतना अहम हिस्सा बन गया है कि इसके बिना रहा ही नहीं जाता, इसलिए तो डिजिटल डिटॉक्स की बात की जाती है, पर अब इससे काम नहीं चलने वाला क्योंकि इन दिनों डिजिटल बाउंड्री भी सुर्खियों में है।

डिजिटल बाउंड्री इरादे से तय की जाने वाली वो सीमा है जिसमें व्यक्ति सोच–समझकर कुछ लोगों से दूरी बनाता है। उसे इस बाउंड्री में यह तय करना होता है कि वह कब, किस समय, कितना और किन लोगों से डिजिटली जुड़ा रहेगा।

हमेशा डिजिटल डिटॉक्स को फॉलो करने की बात तो की जाती है लेकिन इसका तरीका क्या होगा इसपर कोई बात नहीं करता। ऐसे में आप इसे एक अपने फोन जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करने की आदत पर कंट्रोल का एक रूल मान सकते हैं। जबकि बिना डिजिटल बाउंड्री के स्मार्टफोन कैसे समय खराब करने लगता है, इसके बारे में लोग ही नहीं पाते।

कुछ लोग यह समझ ही नहीं पाते कि डिजिटली जरूरत से ज्यादा अवेलेबल रहना उनकी जिंदगी को प्रभावित कर रहा है। आइए जानते हैं इनके संकेत–

सुबह उठते ही फोन चेक करना,
फोन के बगैर दिनभर काम में फोकस न कर पाना
फोन के बिना घबराहट महसूस करना
रात में सोते समय फोन चलाना, रिश्ते खराब होना
हमेशा थकान महसूस करना

ऐसे कई टिप्स और ट्रिक्स हैं जिनकी मदद से डिजिटली बाउंड्री सेट की जा सकती है–

डिजिटली अपनी सीमा तय करने का सबसे पहला तरीका है अपने फोन की नोटिफिकेशन बंद कर देना। इनमें भी सभी एप्स की नहीं पर गैर जरूरी एप्स की। यह तरीका दिमाग को बार–बार भटकने से रोकेगा।

वहीं, जरूरी एप्स इस्तेमाल करने के लिए एक टाइम सेट कर दें। अगर दिन में कई बार ईमेल चेक करते हैं तो इसे केवल दो बार तक ही सीमित रखें।

घर में अपना शेड्यूल ऐसा तैयार करें कि फोन यूज करने का समय ही न मिले।

डिजिटल लोगों से कम से कम बातचीत करें, यह ट्रिक रोज–रोज बात करने के डोपामिन को बढ़ाएगी नहीं।

वहीं, सोशल मीडिया को पूरी तरह से छोड़ना एक मुश्किल टास्क है, इसके लिए रोजाना उसे 1 घंटे तक सीमित करें।

क्यों हमेशा 99, 199 या 999 रुपये ही रखे जाते हैं प्रोडक्ट्स के दाम? समझिए इसके पीछे की खतरनाक साइकोलॉजी

नई दिल्ली, 01 अगस्त। हम जब भी बाजार में या ऑनलाइन शॉपिंग करते हैं तो चीजों के दाम हमेशा 1 रुपये कम होते हैं। आजकल तो इसपर मीम्स तक बनाए जाने लगे हैं, पर कभी सोचा है कि आखिर क्यों सिर्फ 1 रुपया कम करके दाम रखा जाता है?

हम इसे हंसी में लेते हैं पर आपको जानकार हैरानी होगी कि इसके पीछे गहरी साइकोलॉजी और मार्केटिंग का बहुत बड़ा खेल छिपा हुआ है, जिसे आम उपभोक्ता समझ ही नहीं पाते। खरीदार इसके पीछे ये मुख्य वजहें हैंरू

बिजनेस करने वाले एक गहरी साइकोलॉजी को फॉलो करते हैं, जिसके मुताबिक भले ही कीमत 1 रुपये कम हो, लेकिन वह देखने में 1000 या 2000 जैसी चार संख्या वाले नंबर से कम ही लगती है। इसे उदाहरण से समझें तो 999 ग्राहक को 900 के करीब और 1000 से दूर लगता है जबकि असलियत इसके एकदम उलट है। ग्राहक को ऐसा लगता है कि वह कोई भी चीज चार डिजिट से कम में ही खरीद रहा है, यह ट्रिक उसे बचत वाली संतुष्टि और मानसिक शांति दोनों देती है।

दुकानों पर लगे बड़े–बड़े पोस्टर और बैनर के साथ वेबसाइट पर भारी डिस्काउंट वाली सेल का फ्लैश ग्राहक को चीज खरीदने पर मजबूर कर देता है। खासकर, अगर उसमें 4 डिजिट को 3 में दिखाया गया हो, जैसे– 1500

की चीज 999 में। इसके अलावा, 20: या 50: भी लोगों को लुभाते हैं।

क्या आपने लेफ्ट डिजिट इफेक्ट थ्योरी का नाम सुना है? अगर नहीं तो यह भी मार्केटिंग का हिस्सा है। दरअसल, इसके पीछे एक थ्योरी भी काम करती है, जो कहती है लोग हमेशा चीजों को दाईं से बाईं तरफ पढ़ते हैं। इसके चलते पहला अंक दिमाग में ज्यादा याद रहता है।

कई बार ग्राहक सामान खरीदते समय बाकी बचे 1 या 2 रुपये वापिस नहीं लेता। कई बार तो लोग हिचकिचाहट में चेंज वापिस नहीं मांगते, इस तरह यह ट्रिक दुकानदार को फायदा पहुंचाती है। फिर ये कंपनियां 99, 999 जैसे प्राइस टैग क्यों न रखें? मुनाफा छोटा ही सही पर फायदेमंद तो है

खाली पड़ी बालकनी रेलिंग बन सकती है मिनी गार्डन, ये 5 आसान आइडियाज बदल देंगे लुक

नई दिल्ली, 01 अगस्त। अक्सर बालकनी की रेलिंग को हम सिर्फ कपड़े सुखाने या सहारा लेने की जगह समझते हैं, लेकिन सच तो यह है कि यह आपके घर का सबसे उपयोगी गार्डनिंग स्पॉट बन सकती है. खासकर अगर आपकी बालकनी छोटी है, तो रेलिंग पर मिलने वाली धूप पौधों के लिए बेहद फायदेमंद साबित हो सकती है. थोड़ी–सी क्रिएटिविटी और कुछ सस्ते सामान की मदद से आप इस खाली जगह को खूबसूरत वर्टिकल गार्डन में बदल सकते हैं, वह भी बिना फर्श की जगह घेरें.

बालकनी की रेलिंग पर गार्डन बनाने का सबसे आसान और भरोसेमंद तरीका है क्लिप–ऑन प्लांटर बॉक्स लगाना. ये आयताकार गमले हुक या ब्रैकेट की मदद से सीधे रेलिंग पर फिट हो जाते हैं, इसलिए इन्हें लगाने के लिए ड्रिलिंग की जरूरत नहीं पड़ती. इन बॉक्स में आप तुलसी, धनिया, गेंदे के फूल या पेटूनिया जैसे पौधे आसानी से उगा सकते हैं. रेलिंग पर लगे होने के कारण इन्हें अच्छी धूप भी मिलती है, जिससे पौधों की ग्रोथ बेहतर होती है. अगर आप पुराने प्लास्टिक कंटेनर या लकड़ी से खुद प्लांटर बना रहे हैं, तो मजबूत हुक का इस्तेमाल करें. मिट्टी और पानी भरने के बाद गमले का वजन काफी बढ़ जाता है.

अगर आपके पास पुराना कैनवास शू ऑर्गेनाइजर या कई पॉकेट वाला टूल कैडी है, तो उसे फेंकने के बजाय वर्टिकल गार्डन में बदल सकते हैं. बस हर पॉकेट के नीचे कुछ छोटे ड्रेनेज होल बना दें ताकि अतिरिक्त पानी बाहर निकल सके. इसे रेलिंग या दीवार पर टांगने के बाद हर पॉकेट एक छोटे गमले की तरह काम करेगा. इसमें आप सलाद पत्ता, धनिया, पुदीना या सक्युलेंट जैसे छोटे पौधे उगा सकते हैं.

अगर आप कम खर्च में वर्टिकल गार्डन बनाना चाहते हैं, तो पुराने प्लास्टिक की बोतलों और टिन के डिब्बों का इस्तेमाल कर सकते हैं. प्लास्टिक की बोतलों को बीच से

काटकर या साफ टिन के डिब्बों में छोटे छेद बनाकर उन्हें रस्सी, तार या जिप–टाई की मदद से रेलिंग पर बांधा जा सकता है. इन छोटे प्लांटर्स में आप धनिया, पुदीना, तुलसी या छोटे सजावटी पौधे लगा सकते हैं. अगर इन्हें एक ही रंग से पेंट कर दिया जाए, तो आपकी बालकनी और भी सुंदर दिखेगी.

रेलिंग पर गार्डन बनाने के लिए हमेशा कई गमले लगाने की जरूरत नहीं होती. आप बेल वाले पौधों को सहारा देकर भी पूरी रेलिंग को हरियाली से भर सकते हैं. इसके लिए रेलिंग पर गार्डन नेट, बांस की ट्रेलिस या मजबूत जूट की रस्सी बांध दें. फिर मनी प्लांट, मॉर्निंग ग्लोरी या बीन्स जैसी बेलों वाले पौधे लगाएं. जैसे–जैसे पौधे बढ़ेंगे, वे इस जाली पर फैलते जाएंगे और पूरी रेलिंग को हरी–भरी ग्रीन वॉल में बदल देंगे.

अगर आप अपनी बालकनी को थोड़ा स्टाइलिश और खूबसूरत लुक देना चाहते हैं, तो मैक्रमे या रस्सी वाले हैंगिंग प्लांटर्स एक बेहतरीन विकल्प हैं. इन्हें रेलिंग के ऊपरी हिस्से पर लगे हुक से टांगा जाता है, जिससे यह कम जगह में भी शानदार दिखते हैं. आप अलग–अलग ऊंचाई पर दो या तीन हैंगिंग प्लांटर्स लगा सकते हैं. इनमें मनी प्लांट, पोथोस या स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स जैसे लटकने वाले पौधे लगाएं. जैसे–जैसे ये पौधे बढ़ेंगे, उनकी बेलें नीचे की ओर झूलेंगी और आपकी बालकनी को प्राकृतिक और सुंदर लुक देंगी.

इतिहास के पन्नों में 02 अगस्तः भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से सीधे ब्रिटिश क्राउन के पास चला गया

नई दिल्ली, 01 अगस्त (हि.स.)। ब्रिटिश संसद ने भारत सरकार अधिनियम 1858 पारित किया, जिसके तहत भारतीय प्रशासन को ब्रिटिश क्राउन के अधीन कर दिया गया। इस अधिनियम को 2 अगस्त 1858 को शाही स्वीकृति प्राप्त हुई। इसके साथ ही ईस्ट इंडिया कंपनी शासन का अंत हुआ और भारत ब्रिटिश साम्राज्य का प्रत्यक्ष उपनिवेश बन गया।

भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन मुख्य रूप से 1757 से 1858 तक रहा। 31 दिसंबर 1600 को एक व्यापारिक संस्था के रूप में स्थापित हुई यह ब्रिटिश कंपनी, धीरे–धीरे भारत की राजनीतिक सत्ता पर काबिज हो गई। शासन की शुरुआत प्लासी का युद्ध (1757) के साथ हुई जिसमें रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में कंपनी ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को हराया। यह भारत में कंपनी शासन की पहली राजनीतिक आधारशिला थी।

कंपनी का मुख्य उद्देश्य मुनाफा कमाना था। भारी कर और दमनकारी नीतियों के कारण किसानों और बुनकरों की स्थिति बेहद खराब हो गई, जिससे 1770 जैसे भयानक अकाल पड़े। अपने व्यापारिक और सैन्य लाभ के लिए कंपनी ने भारत में रेलवे, डाक और टेलीग्राफ जैसी व्यवस्थाओं की शुरुआत की।

कंपनी की दमनकारी आर्थिक नीतियों, राज्यों को हड़पने की नीयत और धार्मिक हस्तक्षेप के कारण 1857 में भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम छिड़ गया। हालांकि अंग्रेजों ने विद्रोह को दबा दिया लेकिन ब्रिटिश संसद ने ईस्ट इंडिया कंपनी के कुप्रबंधन को देखते हुए उसका शासन पूरी तरह समाप्त कर दिया। भारत की सत्ता सीधे ब्रिटिश क्राउन (राजशाही) के हाथों में सौंप दी गई, जिसे ब्रिटिश राज कहा जाता है।

महत्वपूर्ण घटनाचक्र–1763–मुर्शिदाबाद पर कब्जे के बाद ब्रिटिश सेना ने गिरिया की लड़ाई में मीर कासिम को हराया।
1790– अमेरिका में पहली बार जनगणना का कार्य किया गया।
1934– एडोल्फ हिटलर जर्मनी के सर्वोच्च तानाशाह बने।
1954– दादरा और नगर हवेली को पुर्तगाली शासन से मुक्ति मिली।
1987– विश्वनाथ आनंद ने विश्व जूनियर शतरंज चैंपियनशिप का खिताब जीता।
1990– ईराक द्वारा कुवैत पर अधिकार एवं वहाँ के अमीर का सऊदी अरब पलायन।
1999– चीन ने लम्बी दूरी (8000 किमी.) की सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल का परीक्षण किया।
1999
2003 – संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने लाइबेरिया में संघर्ष विराम लागू करने के लिए सेना भेजने की अनुमति दी।
2007 – जाफना के दक्षिणी द्वीप कियुशु में सुबह आये भयानक तूफान उगासी ने व्यापक पैमाने पर क्षति पहुँचायी।
2008 – सार्वजनिक क्षेत्र के यूनियन बैंक ने हांगकांग में अपनी पहली शाखा खोली। सुधीर कुमार चतुर्वेदी ने पावर ग्रिड कार्पोरेशन के नये अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के रूप में अपना कार्यभार संभाला।
2010 – पाकिस्तान के खैबर–पख्तूनख्वा प्रांत में बाढ़ में 1000 से अधिक लोगों की मौत।
2012 – लंदन ओलम्पिक में भारत ने कुल 6 पदक जीते जिसमें 2 रजत और 4 कांस्य शामिल हैं। भारत इस प्रतियोगिता में 55वें नम्बर पर रहा।

स्कूलों में एआई आधारित शिक्षा को बढ़ावा दे रही सरकार, शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष जोर

नई दिल्ली, 01 अगस्त।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप केंद्र सरकार स्कूल शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें लागू कर रही है। शिक्षकों, स्कूल प्रमुखों और शिक्षक प्रशिक्षकों को एआई–सहायता प्राप्त शिक्षण के लिए सक्षम बनाने के साथ–साथ डिजिटल अवसंरचना को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। यह जानकारी केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में दी।

केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पैरा 4.24 में कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे आधुनिक विषयों को शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाने पर जोर दिया गया है। इसका उद्देश्य विभिन्न स्तरों पर छात्रों में भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल विकसित करना और शिक्षा को तकनीक आधारित बनाना है।

उन्होंने बताया कि केंद्र प्रायोजित समग्र शिक्षा योजना के तहत शिक्षक शिक्षा और सतत पेशेवर विकास को समर्थन दिया जा रहा है। इसके तहत राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डीआईईटी), प्रखंड संसाधन केंद्र (बीआरसी) और क्लस्टर रिसोर्स सेंटर (सीआरसी) जैसे संस्थानों को मजबूत किया जा रहा है। योजना के अंतर्गत शिक्षकों, स्कूल प्रमुखों, शिक्षक प्रशिक्षकों, संसाधन व्यक्तियों, मास्टर ट्रेनर्स और नव नियुक्त शिक्षकों के सेवाकाल प्रशिक्षण का भी प्रावधान किया गया है। साथ ही सरकारी स्कूलों में डिजिटल बोर्ड, वर्चुअल कक्षाएं, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) और अन्य उभरती तकनीकों के माध्यम से डिजिटल शिक्षा को सशक्त बनाया जा रहा है।

मंत्री ने बताया कि समग्र शिक्षा के तहत संचालित निष्ठा (राष्ट्रीय स्कूल प्रमुख और शिक्षक समग्र उन्नति पहल) कार्यक्रम में एआई, डिजिटल शिक्षाशास्त्र और शैक्षिक तकनीक से जुड़े विशेष मॉड्यूल शामिल किए गए हैं। विषय–विशिष्ट मॉड्यूल में गणित, विज्ञान, भाषा और सामाजिक विज्ञान के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग भी सिखाया जाता है।

यह कार्यक्रम दीक्षा प्लेटफॉर्म के माध्यम से उपलब्ध है, जहां शिक्षक अपनी सुविधा के अनुसार ऑनलाइन प्रशिक्षण और अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

जयंत चौधरी ने बताया कि दीक्षा (डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग) अब एक मजबूत लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम के रूप में विकसित हो चुका है। यह प्लेटफॉर्म डिजिटल पाठ्यक्रम, क्यूआर–कोड आधारित पुस्तकें, शिक्षक प्रशिक्षण सामग्री, मूल्यांकन, प्रगति निगरानी और प्रमाणन जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में दीक्षा पर 350 से अधिक लाइव पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, जिनमें लगभग 59 पाठ्यक्रम कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल शिक्षण से संबंधित हैं। प्लेटफॉर्म में एआई–सक्षम व्यक्तिगत शिक्षण सहायता की सुविधा भी उपलब्ध है।

शिक्षा मंत्रालय और एनसीईआरटी नियमित रूप से क्षमता निर्माण कार्यक्रम, कार्यशालाएं और वेबिनार आयोजित कर रहे हैं, जिनमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल शिक्षण, आईसीटी और खुले शैक्षणिक संसाधनों के उपयोग पर प्रशिक्षण दिया जाता है। एनसीईआरटी अब तक एआई से जुड़े प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से 96,000 से अधिक प्रतिभागियों को लाभ पहुंचा चुका है। इसके अलावा, सीबीएसई, एनसीईआरटी, केंद्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस) और नवोदय विद्यालय समिति (एनवीएस) भी शिक्षकों के लिए एआई आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं। (इनपुट– पीआईबी)

'नशामुक्ति मित्र' बनेंगे बदलाव की ताकत, सरकार ने पंचायतों को सौंपी अहम जिम्मेदारी

नई दिल्ली, 01 अगस्त।

केंद्र सरकार नशा मुक्त भारत अभियान (एनएमबीए) के तहत देशभर में नशे के खिलाफ जन–जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी को मजबूत करने के लिए पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका बढ़ा रही है। अभियान के तहत पंचायत संसाधन व्यक्तियों को 'नशामुक्ति मित्र' के रूप में नियुक्त किया जा रहा है, ताकि गांवों में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके और नशा मुक्त समाज के निर्माण में स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री बी.एल. वर्मा ने राज्यसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि नशा मुक्त भारत अभियान के माध्यम से नशाखोरी के खिलाफ जमीनी स्तर पर व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अभियान का उद्देश्य स्थानीय समुदायों, स्वयंसेवकों और पंचायतों को जोड़कर नशे के खिलाफ जन–आंदोलन तैयार करना है।

मंत्री ने बताया कि राष्ट्रीय नशीली दवाओं की मांग में कमी लाने की कार्य योजना (एनएपीडीडीआर) के तहत पंचायती राज संस्थाओं को सीधे जोड़ने के लिए अलग से कोई योजना नहीं बनाई गई है। इसके बावजूद हिमाचल प्रदेश सहित सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पंचायती राज विभागों से पंचायत संसाधन व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें 'नशामुक्ति मित्र' (एनएमएम) के रूप में नियुक्त करने का अनुरोध किया गया है। इन नशामुक्ति मित्रों का दायित्व गांवों में नशे के खिलाफ जागरूकता फैलाना, लोगों को अभियान से जोड़ना और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना है।

सरकार के अनुसार, नशामुक्ति मित्रों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से नशा मुक्त भारत अभियान की सामूहिक प्रतिज्ञा को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी दी गई है। उन्हें विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है। साथ ही, एनएमबीए के लोगो, शुभंकर और राष्ट्रीय नशामुक्ति हेल्पलाइन 14446 के व्यापक प्रचार–प्रसार पर

भी जोर दिया जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक लोग इस अभियान से जुड़ सकें।

बी.एल. वर्मा ने बताया कि एनएपीडीडीआर योजना के राज्य कार्य योजना (एसएपी) घटक के तहत राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निवारक शिक्षा, जन–जागरूकता, क्षमता निर्माण और मादक पदार्थों की मांग में कमी लाने से जुड़ी गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। उन्होंने बताया कि वित्तीय वर्ष 2023–24 और 2024–25 के दौरान हिमाचल प्रदेश को इस मद में कोई धनराशि जारी नहीं की गई थी। हालांकि, वर्ष 2025–26 में राज्य कार्य योजना के तहत विभिन्न गतिविधियों के संचालन के लिए हिमाचल प्रदेश को 1.34 करोड़ रुपए जारी किए गए।

सरकार का कहना है कि पंचायती राज संस्थाओं, सामुदायिक स्वयंसेवकों, शैक्षणिक संस्थानों और नागरिक समाज संगठनों की सक्रिय भागीदारी से नशा मुक्त भारत अभियान को और अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य समाज में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति सतत जागरूकता पैदा करना और जनसहभागिता के माध्यम से नशा मुक्त भारत के लक्ष्य को साकार करना है। (इनपुट– पीआईबी)

राष्ट्रमंडल खेल : पैरा स्पर्धाओं में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, 7 पदकों के साथ अभियान समाप्त

ग्लासगो, 01 अगस्त (हि.स.)।

राष्ट्रमंडल खेल 2026 की पैरा स्पर्धाओं में भारत ने अपने इतिहास का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए अभियान का समापन किया। भारतीय पैरा खिलाड़ियों ने कुल सात पदक जीते, जिनमें तीन स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य पदक शामिल हैं।

भारत को सबसे बड़ी सफलता पैरा एथलेटिक्स में मिली, जहां खिलाड़ियों ने छह पदक अपने नाम किए। इनमें तीन स्वर्ण, दो रजत और एक कांस्य पदक शामिल हैं। इसके साथ ही भारत ने राष्ट्रमंडल खेलों में 20 वर्षों बाद पैरा एथलेटिक्स में पदक जीतने का इंतजार भी खत्म किया। वहीं, पैरा पावरलिफ्टिंग में भारत ने एक कांस्य पदक हासिल किया।

भारतीय दल ने इस बार तीन स्पर्धाओं में ऐतिहासिक डबल पोडियम भी दर्ज किए। इनमें महिलाओं की शॉटपुट एफ57, पुरुषों की शॉटपुट एफ57 और पुरुषों की 100 मीटर टी47 स्पर्धाएं शामिल रहीं, जहां दो–दो भारतीय खिलाड़ी एक साथ पदक जीतने में सफल रहे।

भारत के खिलाड़ियों ने इस अभियान के दौरान एक गेम्स रिकॉर्ड और एक एशियाई रिकॉर्ड भी अपने नाम किया, जो देश के लिए बड़ी उपलब्धि रही।

भारतीय खेल प्राधिकरण के राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्रों ने भी खिलाड़ियों की तैयारी में अहम भूमिका निभाई।

राष्ट्रमंडल खेलों से पहले पैरा पावरलिफ्टिंग टीम का प्रशिक्षण शिविर साई गांधीनगर में आयोजित किया गया था, जबकि पैरा एथलेटिक्स टीम ने साई बेंगलुरु में तैयारी की थी।

राष्ट्रमंडल खेल 2026 की पैरा स्पर्धाओं में भारत का यह प्रदर्शन देश के पैरा खेलों के बढ़ते स्तर और अंतरराष्ट्रीय मंच पर उसकी मजबूत होती मौजूदगी का प्रमाण माना जा रहा है।

फ्रेंडशिप डेः सच्चा और पक्का दोस्त मिलना इस दुनिया में किसी बड़े अनमोल तोहफे से कम नहीं

नई दिल्ली, 01 अगस्त।

जिंदगी के इस सफर में खून के रिश्तों से परे कुछ ऐसे अनमोल रिश्ते भी बनते हैं, जिन्हें हम खुद चुनते हैं और उन्हें दोस्त' कहते हैं। एक सच्चा और पक्का दोस्त मिलना इस दुनिया में किसी बड़े वरदान या अनमोल तोहफे से कम नहीं होता। वही तो होते हैं जो हमारी हर खुशी में बिना किसी स्वार्थ के हंसते हैं और जिंदगी के सबसे मुश्किल वक्त में सबसे पहले हमारा हाथ थामकर खड़े होते हैं। दुनिया के इसी खूबसूरत और अटूट रिश्ते को सेलिब्रेट करने के लिए हर साल फ्रेंडशिप डे 2026 का बेसब्री से इंतजार किया जाता है। इस खास मौके पर लोग अपने जिगरी यार को फ्रेंडशिप बैंड, खूबसूरत गिफ्ट और दिल से निकले प्यारे संदेश भेजकर उन्हें यह अहसास कराते हैं कि वे उनकी जिंदगी में कितने अहम हैं।

अगर आप सोच रहे हैं कि इस बार यह जश्न कब मनाया जाएगा, तो आपको बता दें कि वैश्विक स्तर पर यूनाइटेड नेशन हर साल 30 जुलाई को 'इंटरनेशनल डे ऑफ फ्रेंडशिप' मनाता है। लेकिन भारत, बांग्लादेश और मलेशिया जैसे कई एशियाई देशों में अगस्त के पहले रविवार को ही इस त्योहार को मनाने की एक लंबी और खूबसूरत परंपरा रही है। इस कैलेंडर वर्ष के अनुसार, भारत में फ्रेंडशिप डे 2026 2 अगस्त को मनाया जाएगा। इस दिन संडे होने के कारण स्कूल के बच्चों से लेकर युवाओं और ऑफिस जाने वाले दोस्तों के बीच जबरदस्त उत्साह देखने को मिलता है। हर कोई अपने दोस्तों के साथ पार्टी करने, घूमने और एक–दूसरे की कलाई पर फ्रेंडशिप बैंड बांधकर इस दिन को यादगार बनाने की तैयारियों में जुटा रहता है।

हर साल आने वाला Friendship Day Importance सिर्फ एक तारीख तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस भरोसे, वफादारी और आपसी सम्मान का उत्सव है जो दो इंसानों को बिना किसी खून के रिश्ते के आजीवन बांधे रखता है। यह खास दिन हमें उन लोगों का तहे दिल से शुक्रिया अदा करने का

बेहतरीन मौका देता है, जिन्होंने हमारे हर सुख और दुख की घड़ी में चट्टान की तरह हमारा साथ निभाया हो। व्यस्त जिंदगी की भागदौड़ में जब हम अपनों को वक्त नहीं दे पाते, तब फ्रेंडशिप डे 2026 हमें अपने पुराने या बिछड़े दोस्तों को याद करने और अपनी दोस्ती की डोर को और ज्यादा मजबूत करने का अनमोल अवसर प्रदान करता है।

इस खास दिन को और अधिक रोमांटिक और यादगार बनाने के लिए अपने खास दोस्तों को सोशल मीडिया या व्हाट्सएप पर ये चुनिंदा दोस्तों को भेजें दिल छू लेने वाली Wishes जरूर शेयर करें–

क्या आप जानते हैं कि इस खूबसूरत रिश्ते को समर्पित इस दिन की शुरुआत कब और कैसे हुई थी? इतिहास के पन्नों को पलटें तो दोस्ती को समर्पित दिन मनाने का सबसे पहला प्रस्ताव साल 1958 में पराग्वे की एक संस्था 'वर्ल्ड फ्रेंडशिप क्रूसेड' द्वारा दिया गया था। इसके बाद धीरे– धीरे दुनिया भर के कई देशों ने इसे अपना लिया। अंततः, साल 2011 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने औपचारिक रूप से 30 जुलाई को 'इंटरनेशनल डे ऑफ फ्रेंडशिप' घोषित कर दिया। हालांकि, भारत और कई अन्य देशों में अगस्त के पहले रविवार को ही फ्रेंडशिप डे 2026 मनाने की हमारी अपनी सांस्कृतिक परंपरा आज भी पूरी शान के साथ कायम है।

देशभर के अस्पतालों में 'प्रोजेक्ट सारथी' के विस्तार की तैयारी

नई दिल्ली, 01 अगस्त (हि.स.)।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने शनिवार को देश के अस्पतालों एवं चिकित्सा संस्थानों में 'प्रोजेक्ट सारथी' के विस्तार की संभावनाओं की समीक्षा के लिए उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में केंद्रीय श्रम एवं रोजगार तथा युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया भी उपस्थित रहे।

ठक में पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ में संचालित प्रोजेक्ट सारथी के क्रियान्वयन एवं उसके प्रभाव की समीक्षा की गई तथा इसे केंद्रीय सरकारी अस्पतालों और अन्य स्वास्थ्य संस्थानों में लागू करने पर विस्तार से चर्चा हुई।

इस मौके पर श्री नड्डा ने कहा कि मरीज–केंद्रित स्वास्थ्य सेवाएं केवल उपचार तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसमें मरीजों एवं उनके परिजनों को अस्पताल में समय पर मार्गदर्शन, सहायता और संवेदनशील सहयोग उपलब्ध कराना भी शामिल है। प्रोजेक्ट सारथी ने यह साबित किया है कि सुव्यवस्थित स्वयंसेवी भागीदारी से मरीजों की सुविधा बढ़ती है और चिकित्सकों तथा स्वास्थ्यकर्मियों को अपने नैदानिक कार्यों पर अधिक प्रभावी ढंग से ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिलता है।बैठक में बताया गया कि पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ में सारथी स्वयंसेवकों ने मरीजों को अस्पताल में मार्गदर्शन, व्हीलचेयर एवं स्ट्रेचर उपलब्ध कराने, जांच सेवाओं तक पहुंचाने तथा अन्य गैर–चिकित्सीय सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब तक इस पहल से 2,500 से अधिक स्वयंसेवक जुड़े हैं, जिन्होंने 1.5 लाख से अधिक सेवा घंटे दिए हैं। बैठक में युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की माई भारत पहल के साथ प्रोजेक्ट सारथी के एकीकरण की भी समीक्षा की गई।

सिर्फ 'सपनों का शहर' मुंबई नहीं, ये है असली महाराष्ट्र! जानिए इतिहास से लेकर चटपटे जायकों तक

नई दिल्ली, 01 अगस्त।

भारत के नक्शे के बिल्कुल पश्चिमी छोड़ पर स्थित महाराष्ट्र का नाम लेते ही दिमाग में सबसे पहले मुंबई आता है। इस शहर में हर साल लाखों लोग अपने सपने पूरे करने आते हैं। इसलिए इसे सपनों का शहर कहा जाता है, लेकिन महाराष्ट्र की खासियत सिर्फ मुंबई नहीं है। इस राज्य का इतिहास, कला और खान–पान ऐसा है, जिसके बारे में जानकर आप हैरान रह जाएंगे।

महाराष्ट्र की इतिहास की बात करें, तो छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता और मराठा साम्राज्य का नाम जरूर आता है। रायगढ़, प्रतापगढ़ और सिंधुदुर्ग जैसे किले मराठा साम्राज्य की वीरता और समृद्धि की कहानी कहते हैं। छत्रपति संभाजीनगर में स्थित अजंता और एलोरा की गुफाएं प्राचीन भारत की वास्तुकला का बेहतरीन उदाहरण हैं। ये यूनेस्कों विश्व धरोहर स्थल की सूची में भी शामिल हैं। मुंबई में स्थित गेटवे ऑफ इंडिया भी महाराष्ट्र के ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है। इसे अंग्रेजों के शासन काल के दौरान बनवाया गया था, लेकिन आज ये महाराष्ट्र से सबसे प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में से एक है।

महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट की खूबसूरत वादियां, हरे–भरे जंगल और समुद्री तट यहां की प्राकृतिक खूबसूरती का उदाहरण हैं। नागपुर के पास स्थित ताडोबा–अंधारी टाइगर रिजर्व और पेंच नेशनल पार्क बाघों के लिए मशहूर हैं। यहां बाघों के अलावा, आप स्लॉथ बियर, चीता, जंगली कुत्ते, हिरन और हायना जैसे कई जानवर देख सकते हैं।

मुंबई में स्थित संजय गांधी नेशनल पार्क भी वन्यजीव प्रेमियों के लिए काफी बड़ा अट्रैक्शन है। यहां वेस्टर्न घाट के कई जानवर और पक्षी आप देख सकते हैं। नेशनल पार्क के अलावा, महाराष्ट्र में कई हिल स्टेशन भी हैं, जैसे– महाबलेश्वर, माथेरान, लोनावला। यहां की खूबसूरत वादियां

और हरियाली वेकेशन के लिए काफी बेहतर हैं।

महाराष्ट्र के लोकगीत, नृत्य और त्योहार यहां की संस्कृति को बेहद खास बनाते हैं। लावणी और तमाशा यहां के लोकनृत्य हैं, जो अपने संगीत और एक लय में किए जाने वाले स्टेप्स के लिए जाने जाते हैं। महाराष्ट्र का वर्ली आर्ट यहां की मशहूर चित्रकला है, जो गांव के जीवन को बहुत खूबसूरती से दिखाता है। इसमें प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल होता है और ज्योमेट्रिक पैटर्न में यह पेंटिंग की जाती है।

महाराष्ट्र की संस्कृति की बात करें, तो गणेशोत्सव का नाम लेना जरूरी है। गणेश चतुर्थी यहां के सबसे बड़े त्योहारों में से एक है। इस दौरान पूरा राज्य बप्पा की भक्ति में डूब जाता है और चारों ओर गणपत्ति बप्पा मोरया की जय–जयकार गूंज उठती है। महाराष्ट्र की पैठनी साड़ी और कोल्हापुरी चप्पल भी दुनियाभर में मशहूर हैं और इन्हें जीआई टैग भी मिला हुआ है।

महाराष्ट्र का जायका काफी चटपटा और मसालेदार होता है। स्ट्रीट फूड की बात करें, तो वड़ा पाव, पाव भाजी, मिसल पाव, भेलपूरी और पोहा काफी मशहूर हैं। वहीं पारंपरिक खान–पान में पूरन–पोली, पिठला–भाकरी, सोलकढ़ी, मोदक, श्रीखंड और वरन भात जैसी डिशेज शामिल हैं।

चमगादड़ और पक्षियों की बीट से फैलता है यह जानलेवा फंगस! सीधे फेफड़ों और आंखों पर करता है अटैक

नई दिल्ली, 01 अगस्त।

चमगादड़ और पक्षियों के मल से दूषित मिट्टी में पनपने वाले हिस्टोप्लाज्मा कैप्सुलेटम फंगस इंसानों में मात्र फेफड़ों को ही नहीं बल्कि गंभीर मामलों में मस्तिष्क, आंख, लिवर समेत शरीर के कई अन्य महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान पहुंचाता है। गुरुग्राम में एक महिला की आंख में मिले दुर्लभ हिस्टोप्लाज्मा संक्रमण के मामले ने इस फंगल बीमारी को लेकर चिकित्सकों का ध्यान खींचा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार इसके लक्षण कई बार टीबी या सामान्य फेफड़ों के संक्रमण से मिलते–जुलते हैं। इसलिए केवल लक्षणों के आधार पर निष्कर्ष निकालने के बजाय चिकित्सकीय परामर्श व जांच करानी चाहिए।

समय पर एंटी–फंगल दवाएं शुरू होने पर अधिकांश मरीजों का सफल उपचार संभव है। सर गंगाराम अस्पताल के चेस्ट मेडिसिन विभाग के वरिष्ठ सलाहकार डा. उज्ज्वल पारख ने बताया कि अधिकांश स्वस्थ लोगों में संक्रमण हल्का रह सकता है, लेकिन कमजोर प्रतिरोधक क्षमता वाले मरीजों में यह फेफड़ों से आगे बढ़कर मस्तिष्क, आंख, लिवर, अस्थि मज्जा, लिम्फ नोड्स (लसिका ग्रंथि) और एड्रिनल ग्लैंड (अधिवृक्क ग्रंथियों) तक फैल सकता है।

ऐसे मरीजों में बीमारी तेजी से गंभीर रूप ले सकती है। पीएसआरआइ अस्पताल की पल्मोनोलाजी, क्रिटिकल केयर एवं स्लीप मेडिसिन की वरिष्ठ सलाहकार डा. नीतू जैन के अनुसार यह फंगस उन स्थानों की मिट्टी में पनपता है, जहां लंबे समय तक चमगादड़ या पक्षियों का मल जमा रहता है।

पुराने भवनों की सफाई, गोदामों, तहखानों, निर्माण या खोदाई के दौरान दूषित मिट्टी के सूक्ष्म कण हवा में फैल जाते हैं। सांस के साथ शरीर में पहुंचने के बाद संक्रमण सबसे पहले फेफड़ों को प्रभावित करता है। अगर जोखिम वाले वातावरण में काम करने वाले लोग सतर्क रहते हैं,

समय पर पहचान व उपचार के लिए जागरूक हैं तो इससे बचा जा सकता है।

हिस्टोप्लाज्मा कैप्सुलेटम का किन लोगों को अधिक खतरा?
एचआइवी संक्रमित मरीज, कैंसर का उपचार करा रहे मरीज, अंग प्रत्यारोपण करा चुके मरीज, लंबे समय तक स्टेरायड लेने वाले मरीज, कमजोर प्रतिरोधक क्षमता वाले अन्य लोग।

लक्षण– दो सप्ताह या उससे अधिक समय तक खांसी बने रहना, बुखार या ठंड लगना 4सांस लेने में तकलीफ या सांस फूलना, सीने में दर्द या जकड़न, अत्यधिक थकान और कमजोरी, बिना कारण वजन कम होना आदि।

जहां चमगादड़ या पक्षियों का मल जमा हो, वहां सफाई या खोदाई के दौरान एन–95 मास्क और दस्तानों का इस्तेमाल करें।

धूल उड़ने से बचने के लिए सफाई से पहले मिट्टी को हल्का गीला कर लें।

पुराने बंद भवनों, तहखानों और गोदामों में काम करते समय सुरक्षा उपाय अपनाएं।

लगातार खांसी, बुखार या सांस लेने में तकलीफ होने पर स्वयं दवा लेने के बजाय विशेषज्ञ चिकित्सक से जांच कराएं।